■ सरोकार

जीवन के लिए जीवन के माध्यम से शिक्षा

देवी प्रसाद

अब तक, हमने औपनिवेशिक राज के दौरान भारत की शिक्षा के बारे में यह जाना कि क्यों भारत के शिक्षा नियोजक, औपनिवेशिक शासकों द्वारा हमारी परंपराओं एवं संस्थाओं को ध्वस्त करके सौंपी गई शिक्षा पद्धति से छुटकारा पाना जरूरी समझते थे। स्वतंत्रता आंदोलन के समय सामाजिक सुधारों को देखने का क्या नजरिया था और उपनिवेशकर्ताओं का एशियाई देशों के साहित्य के बारे में क्या सोच थी, इसका भी हमें पता चला। गांधीजी के द्वारा दक्षिण अफ्रीका व भारत में किए गए शिक्षा से संबंधित प्रयोगों पर चर्चा करते हुए उनकी आत्मकथा के माध्यम से जाना कि वे देश में किस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था चाहते थे। इसके साथ ही गांधीजी द्वारा बनाई गई राष्ट्रीय विद्यालय की योजना तथा उसके मूलभूत सिद्धांतों के बारे में पढ़ा। अब इसके आगे...

नई तालीम

देश में 1920 से 1937 के बीच बहुत कुछ घटित हुआ। लोगों में अपनी सांस्कृतिक नींव के बारे में चेतना जागृत होना, लोगों में अंग्रेजों द्वारा इसको किए गए नुकसान की जानकारी, और देश की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों की समझ के कारण यह आवश्यक हो गया कि– एक स्वस्थ और मजबूत भारत के निर्माण के लिए जनशिक्षा तथा व्यक्ति की शिक्षा व इसके साथ स्वतंत्रता आन्दोलन आवश्यक तत्व है। गांधीजी भी इस बात में विश्वास रखते थे कि आजादी प्राप्त किए बिना नई शिक्षा का कार्यक्रम बनाना संभव नहीं होगा।

शांतिनिकेतन व विद्यापीठों को छोड़कर पुनर्जागरण से संबंधित अधिकांश संस्थाएं उनकी मूल सार्थकता खो चुकी थीं या फिर सरकारी मान्यता पर निर्भर थीं। कुछ अभिजात्य वर्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही थीं, जो सरकारी सहायता की आस लगाए थीं। टैगोर ने शांतिनिकेतन को जानबूझकर अराजनीतिक बनाए रखा था। वहां के कुछ लोग अवश्य स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते थे। बिना इन मुद्दों के क्यों के सवाल में जाएं, मैं टैगोर के शिक्षा के संप्रत्यय और गांधीजी के मार्गदर्शन में विकसित नई तालीम के बीच संबंध को देखने का प्रयास करूंगा।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, टैगोर की शिक्षा योजना के तीन केंद्र बिंदु हैं : मातृभाषा, न केवल शिक्षा के माध्यम के रूप में बल्कि लोगों के बीच प्रमुख संचार के माध्यम के रूप में भी; सृजनात्मक प्रवृत्तियां और प्रकृति जिसके हम अविभाज्य अंग हैं।

गांधीजी ने 1937 में जो योजना देश के सामने प्रस्तुत की उसके भी इसी प्रकार के तीन प्रमुख तत्व थे। वे इस बात पर पूरा विश्वास करते थे कि विद्यालयों व कॉलेजों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या उस क्षेत्र की भाषा होनी चाहिए। वे इस बात

पर भी जोर देते थे कि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संचार की भाषा वही हो जो अधिकांश लोग समझते हों व आसानी से सीख सकते हों। दूसरे शब्दों में यह समुदाय के बीच संबंधों का सशक्त साधन हो। मानव समाज अपनी अधिकांश आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर रहता है। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित 'नई तालीम' में भी प्रकृति के साथ अपने संबंध को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। टैगोर के अनुसार प्रकृति ज्ञान, मानव सृजनात्मकता व आजीविका का सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

तीसरा तत्व गांधीजी के अनुसार श्रमकार्य व टैगोर के अनुसार सृजनात्मक प्रवृत्तियां हैं। इन दो विचारधाराओं में बहुत अन्तर नहीं है। टैगोर सृजनात्मक प्रवृत्तियों के आर्थिक पक्ष पर बल नहीं देते। उनके लिए यह कला है जो मानव की सभी आवश्यकताओं भौतिक, संवेगात्मक व आध्यात्मिक, की पूर्ति करती है। गांधीजी का आग्रह उद्योग पर था जो कि आजीविका के लिए व ज्ञान अर्जित करने के साधन के रूप में महत्त्वपूर्ण है।

मुझे नहीं लगता कि दोनों के बीच कोई बहुत बड़ा अंतर है। गांधीजी की विचार धारा जहां निश्चित रूप से बहुलतावादी है, टैगोर की अभिजात्य वर्ग की प्रतीत होती है। कालावधि के कारक को ध्यान में रखें तो गांधीजी को गुरुदेव के शैक्षिक अनुभवों का लाभ मिला। उन्होंने इनसे न केवल कुछ सीखा बल्कि उसमें सुधार भी किए।

बुनियादी शिक्षा का सात प्रांतों में प्रारम्भ

गांधीजी ने जो फल संजोया था वह दो दशकों में अब पक गया था। भारत की राजनीतिक स्थिति में बदलाव आया था। विधानसभा के चुनावों के बाद ब्रिटिश सरकार को सात प्रांतों में कांग्रेस की सरकारें बनाना स्वीकार करना पड़ा। ये कांग्रेस सरकारें और जो भी कुछ करने की आशा रखती हों, गांधीजी ने उन्हें वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बदलकर एक नई शिक्षा की योजना दी।

उन्होंने 31–7–1937 के 'हरिजन' के अंक में एक लेख लिखा 'शिक्षा' शीर्षक से।

शिक्षा की समस्या कैसे सुलझाएं यह प्रश्न दुर्भाग्य से शराब से प्राप्त आय गायब हो जाने के प्रश्न के साथ मिला दिया गया है। उस समय तक शिक्षा के लिए धन शराब पर ली जा रही आबकारी से आता था। गांधीजी ने लिखा :

'हम शिक्षा में इतने पिछड़े हैं कि हम हमारी राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी इस पीढ़ी में नहीं निभा पाएंगे यदि कार्यक्रम धन पर निर्भर होगा। इसलिए मैंने बहुत साहसी सुझाव दिया है शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाने का, इसमें यह खतरा मोल लेते हुए कि मेरी सृजनात्मक क्षमता की साख गिर जाए। शिक्षा से मेरा अर्थ है बच्चे व व्यक्ति में छिपी सर्वांगीण क्षमताएं बाहर लाना। शरीर, मन व आत्मा से संबंधित।'

उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षा के लिए धन अमीरों पर कर लगाकर इकट्ठा किया जा सकता है।

यह कोई काल्पनिक तस्वीर नहीं है। यदि हम हमारे दिमागी आलस्य को त्याग दें, तो हमें नजर आएगा कि यह एक बहुत ही समझदारीपूर्ण एवं व्यावहारिक सुझाव है, उस शैक्षिक समस्या का जिसका कांग्रेस के मंत्रियों को व इसलिए कांग्रेस को सामना करना पड़ रहा है।

गांधीजी ने 1937 में एक सम्मेलन आयोजित किया। जिसमें देश के जानेमाने शिक्षाविद तथा कई प्रान्तों के शिक्षा मंत्रियों ने भाग लिया। उन्होंने अपनी योजना उनके सामने रखी। सम्मेलन ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसके अन्तर्गत यह तय किया गया कि प्रत्येक बच्चे को 6 से 14 वर्ष तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की सुविधा प्रदान की जाए, पढ़ाने

का माध्यम मातृभाषा हो। इस अवधि में सम्पूर्ण शिक्षा श्रम द्वारा किए जाने वाले उत्पादक कार्य को केंद्र में रखकर आयोजित की जानी चाहिए और अन्य सभी कौशल जो विकसित किए जाने हैं, वे केंद्रीय हस्तकला के साथ समन्वित कर विकसित किए जाने चाहिए। बच्चे के वातावरण को उचित सम्मान दिया जाए, तो यह शिक्षा पद्धति शिक्षकों के वेतन का भार शनैः शनैः उठा लेगी।

कुछ समय बाद एक अखिल भारतीय संगठन 'हिंदुस्तानी तालीम संघ' की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य बुनियादी शिक्षा को पूरे देश में फैलाना व कुछ प्रायोगिक विद्यालय स्थापित करना था। इस प्रकार का प्रथम विद्यालय गांधीजी के आश्रम सेवाग्राम में स्थापित हुआ। यह हिंदुस्तानी तालीम संघ का केंद्र बना जिसमें श्री ई.डब्ल्यू. आर्यनायकम महामंत्री बने व गांधीजी ने जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रमुख डॉ. ज़ाकिर हुसैन को संघ का अध्यक्ष चुना।

ऐसा लगा कि पूरे देश में शैक्षिक पुनर्संरचना की एक लहर दौड़ गई। कुछ राज्यों ने शैक्षिक पुनर्गठन की समितियां गठित कीं, शिक्षक प्रशिक्षण एवं रिफ्रेशर्स ट्रेनिंग सेंटर्स की स्थापना की। कुछ नए बुनियादी विद्यालयों की स्थापना की गई व कुछ प्राथमिक विद्यालयों को बुनियादी विद्यालयों में परिवर्तित किया गया। शिक्षकों के लिए बुनियादी शिक्षा पर साहित्य तैयार किया गया। अपने विषय के कुछ बहुत अनुभवी शिक्षकों द्वारा एक सात वर्षीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया।

श्री आर्यनायकम ने अपनी द्विवर्षीय रिपोर्ट में लिखा कि :

'बुनियादी शिक्षा का कार्यक्रम' एक प्रयोग के रूप में कुछ राज्यों में चलाया जा रहा था, जैसे सी.पी., यू. पी., बिहार, उड़ीसा, बम्बई तथा कश्मीर। कुछ गैर सरकारी संस्थाओं में भी यह प्रयोग चलाया जा रहा था। कुल मिलाकर बारह शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, दो शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सात रिफ्रेशर्स ट्रेनिंग सेंटर तथा पांच हजार से अधिक विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा का प्रयोग चलाया जा रहा था।' लोगों में इतना उत्साह था कि जब उड़ीसा सरकार ने दो वर्षों के प्रयोग के बाद बुनियादी विद्यालय बंद कर दिए तो लोगों ने अपने स्तर पर काम जारी रखा। पन्द्रह बुनियादी विद्यालयों में से सात चालू रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि– इस पद्धति ने लोगों की रुचि को आकर्षित किया था।

दो वर्षों बाद कांग्रेस मंत्रियों ने इस्तीफे दे दिए। इसके परिणाम स्वरूप सातों प्रान्तों में सरकार द्वारा संचालित बुनियादी विद्यालय बन्द हो गए। परन्तु स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालय 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरुआत तक चलते रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि कई सक्रिय कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए। इनमें वे भी शामिल थे जो गांधीजी के रचनात्मक कार्यों से जुड़े थे। गांधीजी सबसे पहले गिरफ्तार हुए।

जामिया मिलिया इस्लामिया के परिसर में आयोजित द्वितीय बुनियादी शिक्षा सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्तावों से पता चलता है कि दो वर्षों की अल्प अवधि में बुनियादी विद्यालयों ने कितने अच्छे परिणाम प्राप्त किए।

यह सम्मेलन व्यक्त करता है कि सरकार, स्थानीय स्वशासन व निजी संस्थाओं द्वारा संचालित बुनियादी विद्यालयों के संबंध में जो प्रतिवेदन आए हैं, वे सर्वानुमति से यह स्वीकार करते हैं कि स्वास्थ्य, व्यवहार व बौद्धिक उपलब्धि के स्तर बहुत ही प्रोत्साहित करने वाले हैं। बुनियादी विद्यालयों के बच्चे अधिक सक्रिय, प्रसन्नचित, स्वावलंबी हैं व उनकी अभिव्यक्ति क्षमता पूर्ण विकसित है। उनमें मिलकर सहयोग के साथ कार्य करने की आदत का विकास हो रहा है और सामाजिक पूर्वाग्रह टूट

रहे हैं। किसी भी नई योजना की प्रारंभिक अवस्था में कठिनाइयां आना स्वाभाविक है; खासकर जब उस योजना में नई विचार धारा निहित हो तथा नई विधियां काम में ली जा रही हों। जो प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है उससे यह आशा बनती है कि भविष्य में और भी अच्छे परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

नई तालीम का जन्म

भारत के लिए 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन ने बहुत महत्त्वपूर्ण अनुभव प्रदान किया, खासकर गांधीजी की अगुवाई में चलाए जा रहे स्वतंत्रता संग्राम की उपलब्धियों व कठिनाइयों की समीक्षा के संदर्भ में। कुछ ही दिनों में स्वतंत्रता आन्दोलन के अधिकांश कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए। केवल वे ही बचे जो या तो भूमिगत हो गए थे या जिन्हें सरकारी तंत्र ने अपनी तरफ मिला लिया था, स्वेच्छा से या किसी और तरीके से। उन राजनैतिक पार्टियों के लोग, जो भारत छोड़ो आन्दोलन के पक्ष में नहीं थे, वे जेलों से बाहर रहे।

गांधीजी करीब दो वर्ष तक जेल में रहे। वह शायद उनके जीवन का सबसे कठिन समय था। उनके दो निकटस्थ सहयोगियों उनकी पत्नी कस्तूरबा और महादेव देसाई की उसी जेल में मृत्यु हो गई, जो उनके दाहिने हाथ थे। उन दिनों शायद उन्होंने अपने जीवन में जो किया या करना चाहते थे उसका पूर्ण रूप से आत्मनिरीक्षण किया होगा। उनकी एक शिक्षक के रूप में जीवन भर की तपस्या ने उन्हें यह प्रश्न पूछने पर मजबूर किया होगा कि वे अब तक सही रास्ता ढूंढ़ने में सफल क्यों नहीं हुए हैं, वह रास्ता जो वे दक्षिण अफ्रीका में अपने वृहत परिवार के बच्चों को पढ़ाते समय से खोज रहे हैं। उन्होंने अपने से कई प्रश्न किए होंगे जिनमें कुछ बुनियादी शिक्षा के प्रयोग से व इसके भविष्य से संबंधित भी होंगे।

जब वे जेल से बाहर आए तो उनकी दो प्रमुख चिन्ताएं थीं (क) कि ब्रिटिश साम्राज्य का भारत में शीघ्रातिशीघ्र अन्त हो तथा (ख) भारत के लोगों के लिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था की योजना बनाना जो उन्हें मिली आजादी का उपयोग उन्हें उन परिस्थितियों से ऊपर उठने में तैयार कर सके, जिनमें उन्हें उपनिवेशवादी शासन के दौरान धकेला गया था। जैसे भयंकर गरीबी, निराशावाद, अज्ञान तथा असहायपन की अनुभूति।

विगत एक चौथाई शताब्दी तक गांधीजी ने आजादी की अहिंसक लड़ाई का नेतृत्व किया, राजनैतिक आर्थिक व सामाजिक स्तर पर। उन्होंने लोगों को जीवन के हर पहलू के लिए विकल्पों की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया।

वर्तमान व्यवस्थाओं और संस्थाओं को बदलने हेतु अठारह सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम बना। उदाहरण के तौर पर– स्थानीय उद्योगों का विकास– कपड़ा, गृहनिर्माण, खाद्य सामग्री, बुनियादी शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, सामाजिक समता तथा सामुदायिक जीवन।

जब कभी उनके पास कोई सुझाव आता और उन्हें लगता कि वह ध्यान देने योग्य है तो उस प्रवृत्ति की जिम्मेदारी लेने के लिए वे व्यक्ति ढूंढ़ लेते या कुछ लोग खुद उनके पास चले आते। इसका बहुत अच्छा उदाहरण कोढ़ अभियान का है। परम्परागत रूप से कोढ़ के बारे में बहुत गलत धारणाएं थीं। जिस किसी को यह बीमारी हो जाती उसे अछूत से भी नीचा समझा जाता था। गांधीजी सदैव इस प्रकार की परम्पराओं के विरुद्ध चिकित्सकीय स्तर पर तथा सामाजिक आर्थिक स्तर पर काम करते रहे। 1942 में एक व्यक्ति जो इस बीमारी से ठीक हो चुका था ने गांधीजी को अपनी कहानी सुनाई। मैंने उन्हें इस व्यक्ति को यह कहते सुना है : ''तुमको ईश्वर ने मेरे पास भेजा है, इस योजना के साथ कि तुम पूरे भारत में

कोढ़ के प्रति जो अमानवीय दृष्टिकोण है, उसके खिलाफ अभियान चलाओ।'' इससे उस व्यक्ति को इतनी प्रेरणा मिली कि उसने पूरे भारत में यह अभियान खड़ा किया। यह उस अठारह सूत्री कार्यक्रम का एक मुद्दा था।

गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम देश में वैकल्पिक तरीके व संस्थाएं उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से चलाया गया था। उनको आशा थी कि एक बार भारत आजाद हो जाए, तो उसका एक जांचा परखा राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक ढांचा होगा, जिसके आधार पर देश का कामकाज अहिंसक तरीके से चलाया जा सकेगा।

गांधीजी का आग़ाखान पैलेस में बंदीकरण उनके आत्मचिंतन का समय था। जेल से बाहर आने पर उन्होंने कहा, ''मैं अपने बंदीवास के दौरान नई तालीम की संभावनाओं के बारे में सोचता रहा जब तक मेरा दिमाग बेचैन हो गया'' उन्होंने यह भी कहा, ''हमें हमारी वर्तमान उपलब्धियों से संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। हमें बच्चों के घरों में प्रवेश करना होगा। हमें उनके माता–पिताओं को शिक्षित करना होगा। बुनियादी शिक्षा वास्तव में जीवन की शिक्षा बननी चाहिए... मुझे यह स्पष्ट हो गया है कि बुनियादी शिक्षा का दायरा बढ़ाना चाहिए... बुनियादी विद्यालय के शिक्षक को अपने आप को सार्वभौमिक शिक्षक मानना चाहिए, उसका गांव उसकी दुनिया है...।''

जनवरी 1945 में 'नई तालीम' का एक सम्मेलन बुलाया गया। अपने उद्घाटन भाषण में गांधीजी ने इस पद्धति का एक बिलकुल संशोधित नक्शा पेश किया कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा :

हालांकि हम नई तालीम पर विगत कुछ वर्षों से काम कर रहे हैं, परन्तु हम एक किनारे के पास के समुद्र में तैर रहे हैं जो कि तुलात्मक रूप से सुरक्षित है। हम अब उथले पानी को छोड़कर गहरे समुद्र में जा रहे हैं। अब तक हमारा रास्ता हमें मालूम था। अब हमारे सामने पानी में रास्ता हमें ज्ञात नहीं हैं। अब ध्रुव तारा ही हमारे लिए एक मेव मार्गदर्शक है और वह ध्रुव तारा है गांवों के हस्तशिल्प।

अब हमारा काम का क्षेत्र केवल 6 से 14 वर्ष के बच्चों की नई तालीम तक ही सीमित नहीं है इसे अब जीवन की पूरी यात्रा को अपने दायरे में लेना है, जन्म से मृत्यु के क्षण तक। इसका अर्थ अब हमारा काम बहुत बढ़ गया है जबकि कार्यकर्ता वही हैं। पर इससे हमें चिंतित नहीं होना चाहिए। हमारा साथी सत्य है और वह ईश्वर है। वह हमें कभी दगा नहीं देगा। पर सत्य हमारी सहायता तभी करेगा जब हम हर परिस्थिति में उसका साथ देंगे। इसमें पाखण्ड, छद्मकरण, गर्व, मोह या क्रोध का कोई स्थान नहीं है।

हमें ग्रामवासियों का शिक्षक बनना है। इसका अर्थ यह है कि हमें सही मायने में उनका सेवक बनना है। हमें यदि कोई पुरस्कार मिलना है तो वह अन्दर से मिलेगा बाहर से नहीं। हमें इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए कि सत्य के रास्ते पर कोई इंसान हमारे साथ है या नहीं। ना ही नई तालीम किसी बाहरी वित्तीय सहायता पर निर्भर है। इसे अपने रास्ते पर चलाते रहना है इसके आलोचक कुछ भी कहें। मैं समझता हूं कि सच्ची शिक्षा आत्मनिर्भर होनी चाहिए। इसमें कोई शर्म की बात नहीं है।

यह एक बिल्कुल नया विचार होगा। यदि हम यह सिद्ध कर सकें कि दिमाग के विकास का हमारा तरीका ही एकमात्र तरीका है तो आज जो नई तालीम का विरोध कर रहे हैं कल वे ही हमारे प्रशंसक हो जाएंगे। और अंत में नई तालीम को दुनिया भर में स्वीकृति मिलेगी।

यह केवल एक स्वप्न है या वास्तविकता, यही नई तालीम का लक्ष्य है और इससे कम कुछ नहीं। सत्य का ईश्वर इस लक्ष्य की प्राप्ति में हमारी सहायता करे।

मैं आपका ध्यान एक और चीज की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं। मैं सेवाग्राम केंद्र को नई तालीम के प्रयोग के लिए सबसे उपयुक्त स्थान मानता हूं, क्योंकि यहां चरखा संघ अपना मुख्य प्रयोग चला रहा है। वर्धा दूसरे ग्रामीण उद्योगों का भी केन्द्र है...। सेवाग्राम अकेला नहीं है; इसके आसपास करीब 20 गांव स्थित हैं। इसलिए, यदि नई तालीम का किसी वास्तविक माहौल में कहीं प्रयोग हो सकता है तो वह यहीं हो सकता है।

उन्होंने जो योजना रखी थी, वह समुदाय के हर एक के लिए थी। इसके प्रमुख भाग इस प्रकार थे :

(1) प्रौढ़ शिक्षा– पूरे समुदाय के लिए, शहर के बच्चों के माता–पिता के लिए भी।

(2) प्री–बेसिक (पूर्व बुनियादी शिक्षा) – ढाई साल से सात वर्ष के बच्चों के लिए।

(3) बेसिक एज्यूकेशन (बुनियादी शिक्षा) – सात से चौदह वर्ष के बच्चों के लिए।

(4) पोस्ट बेसिक एज्यूकेशन (उत्तर बुनियादी शिक्षा) – चौदह से अठारह वर्ष के बच्चों के लिए।

(5) विश्व–विद्यालयी शिक्षा – अठारह वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों के लिए।

गांधीजी का सबसे महत्त्वपूर्ण बयान 'नई तालीम' की नई परिप्रेक्ष्य–योजना घोषित करने बाद आया। हर नए कार्यक्रम के लिए अनुस्थापन होना चाहिए। या दूसरे शब्दों में कहें तो वे सब प्रवृत्तियां 'नई तालीम' का हिस्सा ही मानी जानी चाहिए। या यों कहें भारत के पुनर्निर्माण हेतु चलाई जाने वाली हर प्रवृत्ति को शिक्षा से जोड़ना चाहिए।

सेवाग्राम में नई तालीम

कई संस्थाओं ने जो पहले बुनियादी शिक्षा से जुड़ी थीं उन्होंने पुनः काम करना प्रारम्भ कर दिया। इसका केंद्रीय स्थान सेवाग्राम था। देश भर में चल रहे नई तालीम के काम के लिए स्थापित एक आदर्श विद्यालय जो कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिये एक अभ्यास पाठ विद्यालय भी था उसमें मुझे छः माह के लिए एक कला अनुदेशक का कार्य मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे छः माह के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को प्रशिक्षण देना था। यह बड़ा अजीब लगता है कि मैं सेवाग्राम में छः माह के स्थान पर नई तालीम के साथ अठारह वर्ष रहा। मैं 1944 में जब सेवाग्राम पहुंचा तो मैंने शिक्षकों और बच्चों के चेहरे पर उत्साह पाया। शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में देश के सभी भागों से करीब 60 से अधिक शिक्षक आए थे। यह 25 से 50 वर्ष के बीच की उम्र के सक्रिय व कुशाग्र बुद्धि वाले शिक्षकों का समूह था।

प्रार्थना के बाद हम परिसर के हर स्थान का, जिसमें शौचालय भी शामिल थे सफाई में लग जाते थे। वास्तव में शौचालय साफ करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। भारत में यह बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यहां शौचालयों को साफ करना अछूतों का कार्य माना जाता है। मैंने जब नई तालीम के इस पहलू का अनुभव कि तो मुझे पेस्टोलोजी की वह बात याद आई जिसमें उन्होंने कहा था कि मैं उनके स्तर तक नीचे आ गया (गरीब व अशिक्षितों) ताकि मैं उन्हें अपने साथ ऊपर उठा सकूं। यह एक बहुत ही हृदय विदारक व ऊंचा उठाने वाला अनुभव था।

वास्तव में सेवाग्राम के विद्यालय के कर्मचारियों व अन्य लोगों ने स्वच्छता को एक विज्ञान व एक कला बना दिया था और इसकी तकनीक बहुत अच्छी तरह से विकसित कर ली थी। यह विद्यालय व समुदाय में एक अलग विषय बन गया था। उस पैंतालीस मिनट के सामुदायिक स्वच्छता कार्यक्रम के बाद हर व्यक्ति अपने काम में लग जाता– कुछ खेतों में काम करते जिनमें हम अपना अन्न, सब्जियां

व फल उगाते थे, अन्य लोग कताई बुनाई की कार्यशालाओं में काम करने, और अन्य लोग कुछ दूसरे कामों में लग जाते, जिसमें समुदाय के लिए भोजन बनाने का काम शामिल था। हम सब बारी–बारी से खाना बनाते थे। कार्यशालाओं की संख्या धीरे–धीरे समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप और बढ़ते हुए शैक्षणिक कार्यक्रम के साथ–साथ बढ़ती गई।

दोपहर को कुछ घण्टों के अवकाश के बाद सब बच्चे उनके द्वारा दिनभर में किए गए काम से संबंधित व जीवन के अन्य पहलुओं से संबंधित पढ़ाई में लग जाते थे जिनमें स्वास्थ्य व सांस्कृतिक पहलू शामिल थे। दोपहर को सभी बच्चों के लिए संगीत व कला की कक्षाएं होती थीं। कभी–कभी दोपहर को विशेष समारोहों की तैयारी व अभ्यास भी किया जाता था। बच्चे, अध्यापक व कला शिक्षक मिल कर समारोह स्थल की अल्पनाओं, फूलों व वस्त्रों से सजावट करते थे। मंच संचालन बुनियादी तालीम का एक महत्त्वपूर्ण भाग था। हमारे यहां साधारण खेलों की भी व्यवस्था थी, विशेषकर ऐसे खेलों की जिनमें बहुत अधिक खेल सामग्री की आवश्यकता न हो।

यहां एक और विशेषता का उल्लेख करना आवश्यक है, वह है त्यौहारों को मनाने व प्रार्थना के संबंध में। सभी धर्मों के त्यौहार मनाए जाते थे व प्रार्थना गांधीजी के आश्रम की ही होती थी जिसमें सर्वधर्म प्रार्थनाएं शामिल थीं। इससे बच्चों पर सभी धर्मों की बराबरी के संबंध में अच्छा प्रभाव पड़ता था।

अन्त में विद्यार्थियों द्वारा स्व–मूल्यांकन के बारे में उल्लेख करना उपयोगी होगा। बच्चों द्वारा किए स्व–मूल्यांकन के अनुच्छेदों के शीर्षकों से शिक्षा की विषय वस्तु के बारे में अन्दाज लग सकता है जो उस बच्चे ने प्राप्त की है। सामान्यतौर पर ली जाने वाली परीक्षा के स्थान पर सेवाग्राम में स्वमूल्यांकन व उसके साथ शिक्षकों के मूल्यांकन को अधिक प्रभावी व सृजनात्मक तरीका माना जाता था, बच्चों के सर्वांगीण विकास की प्रगति को जांचने का।

इसके कुछ शीर्षक थे : मेरा स्वास्थ्य; सामाजिक जीवन; भोजनशाला में काम; सामुदायिक सफाई; प्रार्थना; मेहमानों की मेहमाननवाजी; बीमारों की देखभाल; त्यौहार; सहकारी स्टोर; मेरा छात्रावास व अपने परिवार में व्यवहार; ग्राम कार्य; उद्योग व स्वावलंबन; कमाई व कपड़ों के संबंध में स्वावलंबन; भवन निर्माण कार्य; बागवानी; छपाई प्रेस में कार्य; भाषा व साहित्य; मातृभाषा; राष्ट्रभाषा; अन्य भाषाएं (अंग्रेजी); उद्योग व कृषि विज्ञान; सामाजिक विज्ञान; स्वाध्याय; मेरा रूझान व भविष्य योजना अध्ययन/कार्य के बारे में।

नई तालीम के प्रयोग के बारे में बहुत कुछ कहने व समझाने को है। उसका दसवां हिस्सा भी इतनी थोड़ी सी जगह में कहना कठिन है। इस विषय पर बहुत सामग्री उपलब्ध है। जो कमी है वह है नई तालीम के विश्लेषणात्मक अध्ययन की। उदाहरण के तौर पर अक्सर यह प्रश्न पूछा जाता है कि नई तालीम इतनी अच्छी शिक्षा पद्धति होते हुए भी इसका इतना प्रसार क्यों नहीं हुआ जितना होना चाहिए था? किसी दिन इस विषय पर गहन अध्ययन करना होगा। अभी के उद्‌देश्य के लिए मुझे लगता है इतना काफी होगा।

देवी प्रसाद : सन् 1944 से 1962 तक सेवाग्राम (वर्धा) में नई तालीम के शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय में प्रशिक्षक रहे हैं।
हिन्दी रूपान्तरण : **ए.बी. फाटक** , विद्या भवन सीनियर सैकण्डरी स्कूल के प्रधानाचार्य एवं शाह गोवर्द्धनलाल काबरा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय जोधपुर में प्राचार्य रहे हैं। वर्तमान में विद्या भवन सोसायटी से जुड़े हैं।